नईदुनिया

यूक्रेन के नए सैन्य प्रमुख के नेतृत्व में रूस पर 21 जुलाई से हमले बढ़े, अब तक कम से कम 100 लोगों की मौत

मास्को

रूसी विदेश मंत्रालय में विशेष दूत रोडियन मिरोशनिक ने कहा कि यूक्रेन के नए सैन्य प्रमुख मिखाइल द्रापाटी की नियुक्ति के बाद कीव के हमले बढ़ गए हैं ।राजनयिक ने कहा, मेजर जनरल द्रापाटी ने 21 जुलाई को कार्यभार संभाला। तब से लगभग 950 नागरिक प्रभावित हुए हैं। इनमें से 100 से ज्यादा लोग मारे गए हैं। इस दौरान कम से कम 45 बच्चे प्रभावित हुए। इनमें से 15 की मौत हो गई। द्रापाटी की बदली रणनीति के तहत आम बसों, गाड़ियों, खेती की मशीनों और एम्बुलेंस पर हमले तेज कर दिए हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, मिरोशनिक ने कहा, द्रापाटी के सैन्य प्रमुख का पद संभालने के साथ ही कायरतापूर्ण हमले बढ़ गए हैं। उन्होंने अपने पूर्ववर्ती अलेक्जेंडर सिरस्की और पूर्व प्रमुख मिखाइल फेडोरोव की नीति को नहीं बदला, बल्कि पश्चिमी देशों से मिली सैन्य मदद और बड़ी संख्या में आए किलर ड्रोन का इस्तेमाल तेज करने के लिए किया। इससे रूस पर कीव की सैन्य क्षमता को कमजोर करने का दबाव बढ़ गया है। बताया गया है कि यूक्रेन ने रूस पर ड्रोन हमले कर कई गोदामों को निशाना बनाया। यह गोदाम प्राइवेट कंपनियों के हैं। इन हमलों में कम से कम पांच लोगों की मौत हो गई। कार्यवाहक क्षेत्रीय गवर्नर विटाली कोरोल्योव ने इसकी पुष्टि की। उन्होंने कहा पांच लोगों की मौत चेखोव शहर के एक गोदाम पर हुए ड्रोन हमले में हुई और 10 अन्य घायल हो गए। उधर, सेंट पीटर्सबर्ग में तीसरे रूस-कजाकिस्तान मीडिया फोरम में रूस के उप विदेशमंत्री मिखाइल गलुजिन ने कहा कि यूक्रेन सरकार रूस में आर्थिक बुनियादी ढांचे की सुविधाओं पर हमला करके तनाव बढ़ाने की कोशिश कर रही है। इस बीच रूस के सैन्य विशेषज्ञ आंद्रे मारोचको ने लुगांस्क में कहा कि देश के सैनिकों ने सुमी क्षेत्र में नोवाया सेच के पास यूक्रेन की सुरक्षा व्यवस्था में सेंध लगा दी है और मारिनो बस्ती की ओर दबाव बनाना शुरू कर दिया है। उन्होंने कहा कि सैनिक सुमी दिशा खासकर इवोल्झांस्की सेक्टर में अपनी बढ़त बनाए हुए हैं। सबसे पहले, नोवाया सेच बस्ती की ओर से दक्षिण-पूर्व दिशा में दुश्मन की सुरक्षा व्यवस्था में सेंध लगाई गई है। अब जवान मारिनो बस्ती पर दबाव बना रहे हैं। यह बस्ती खापोव्शचिना के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। रूसी रक्षा मंत्रालय ने 29 जुलाई को नोवाया सेच को यूक्रेन के नियंत्रण से मुक्त कराने की घोषणा की थी ।

न्यूज ब्रीफ

नेपाल के चितवन राष्ट्रीय उद्यान के सौराहा में दिखा सफेद हाथी

काठमांडू। नेपाल के चितवन राष्ट्रीय उद्यान के सौराहा क्षेत्र में नया सफेद जंगली हाथी दिखा है। इसकी उम्र का

अनुमान लगभग 18 से 19 वर्ष लगाया गया है। यह करीब दो सप्ताह से इस क्षेत्र में विचरण कर रहा है। राष्ट्रीय उद्यान के सहायक संरक्षण अधिकारी प्रवीण पौडेल के अनुसार, यह हाथी फिलहाल सौराहा बफर जोन में रह रहा है। हाल ही में वह हाथी प्रजनन केंद्र तक पहुंचा, लेकिन वहां मौजूद अन्य जंगली हाथियों ने उसे खदेड़ दिया। पौडेल ने बताया कि अब यह हाथी राष्ट्रीय उद्यान तथा राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण न्यास के हाथियों के संरक्षित क्षेत्रों के आसपास घूम रहा है। अब तक इसने किसी मानव बस्ती में प्रवेश नहीं किया है और न ही किसी प्रकार का नुकसान पहुंचाया है। प्रवीण पौडेल के अनुसार, युवा नर हाथी कई बार अपने झुंड से अलग होकर अकेले रहने लगते हैं। चूंकि हाथियों के झुंड का नेतृत्व मादा हाथी करती हैं, इसलिए शरारती या आक्रामक युवा नर हाथियों को झुंड की मुखिया बाहर निकाल देती है। यह बात पूर्व में किए गए अध्ययनों में भी सामने आई है। उन्होंने कहा कि यह सफेद हाथी अपना अधिकांश समय सौराहा के मध्य क्षेत्र में बिता रहा है और समय-समय पर मादा हाथियों की तलाश में बाड़े तक पहुंच जाता है। चितवन राष्ट्रीय उद्यान में पहले से ही ध्रुवे, गोविन्दे और रोनाल्डो जैसे कई अकेले रहने वाले जंगली हाथी मौजूद हैं। इनसे पहले रोमियो, नाना पाटेकर और मकुना नाम के जंगली हाथी भी इस उद्यान में घूमते रहे हैं।

उत्तर कोरिया ने अमेरिका के नेतृत्व में युद्धाभ्यास को बताया आक्रामक युद्ध की रिहर्सल

सोल। उत्तर कोरिया ने अमेरिका के नेतृत्व में हाल ही में आयोजित बहुराष्ट्रीय नौसैनिक अभ्यास रिम आफ द पैसिफिक को आक्रामक युद्ध की रिहर्सल करार दिया है। साथ ही उसने चेतावनी दी कि वह इसके जवाब में प्रतिरोधक क्षमता को नए स्तर पर ले जाएगा। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक एक सैन्य टिप्पणीकार के हवाले से प्रकाशित लेख में कहा गया है कि रिमपैक अभ्यास दक्षिण कोरिया, अमेरिका और जापान के बीच बढ़ते सैन्य सहयोग का प्रतीक है और इसका उद्देश्य क्षेत्र में सैन्य दबदबा कायम करना है। लेख में दावा किया गया कि इस बार अभ्यास में दक्षिण कोरिया और जापान की भूमिका पहले की तुलना में ज्यादा व्यापक रही, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वाशिंगटन तीनों देशों के बीच सैन्य समन्वय और संयुक्त अभियान क्षमता को और मजबूत करना चाहता है। अमेरिकी प्रशांत बेड़े के उप-कमांडर के उस बयान का भी इसमें उल्लेख किया गया, जिसमें कहा गया था कि दक्षिण कोरिया और जापान की भूमिका केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि वास्तविक सैन्य अभियानों के लिए अहम है। उत्तर कोरिया ने इसे इस बात का प्रमाण बताया कि दुनिया के सबसे बड़े नौसैनिक अभ्यासों में शामिल रिमपैक का उद्देश्य संभावित सैन्य कार्रवाई की तैयारी करना है। उत्तर कोरिया ने हाल के दक्षिण कोरिया-अमेरिका संयुक्त सैन्य प्रोग्राम्स की भी आलोचना की।

बेसमेंट में चल रही थी मरम्मत, प्लंबर को दिखी रस्सी खोदा चमकी किस्मत, सोने के सिक्कों से भरे बक्से से बंधी थी रस्सी, सिक्कों की कीमत 2.4 मिलियन डालर

वियना। प्लंबर को एक घर के बेसमेंट की मरम्मत के दौरान सोने के सिक्कों से भरा खजाना मिल गया। इस सोने के सिक्कों की कीमत भारतीय मुद्रा में करीब 23 करोड़ रुपए बताईग् जा रही है। दसअसल, दुनिया में किसी भी रहस्यमयी रस्सी या केबल को देखकर कोई भी इंसान यह सोच सकता है कि उसके दूसरे सिरे पर क्या होगा, लेकिन शायद ही कभी उसका नतीजा इतना अच्छा होता है कि वह लाखों डालर की कीमत का हो, लेकिन आस्ट्रिया के प्लंबर की तो लाटरी ही लग गई। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक आस्ट्रिया की राजधानी वियना में एक विला की मरम्मत के दौरान प्लंबर को बेसमेंट के फर्श से बाहर निकली हुई एक ऐसी ही रस्सी दिखी। जब उसने उस कंक्रीट को खोदा जिसमें से वह रस्सी निकल रही थी, तो वह हैरान रह गया। वह रस्सी असल में सोने से भरे एक खजाने के बक्से से जुड़ी थी, जिसकी कीमत करीब 2.4 मिलियन डालर थी।

पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र करते हैं चांद की विनाशक सौर पवन से सुरक्षा : शोध

बीजिंग

पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र चांद को विनाशकारी सौर पवन से सुरक्षा प्रदान करती है। चीन के चेंज-6 मिशन द्वारा चांद के फार साइड (अंधेरे हिस्से) से लाए गए सैंपल्स के विश्लेषण से यह बात साबित हुई है। वैज्ञानिकों का कहना है कि हमारी पृथ्वी अंतरिक्ष में एक मजबूत ढाल की तरह काम करती है, जो अपने उपग्रह चांद को सूरज के खतरनाक कोप से बचाती है। इस खोज ने वैज्ञानिकों को पहली बार चांद की मिट्टी में छिपे रासायनिक सिगनेचर को सीधे तौर पर पढ़ने में कामयाबी दिलाई है। चाइनीज एकेडमी आफ साइंसेज के साइंटिस्ट झांग शुहांग और प्रोफेसर ही हुआइयू की टीम ने इस महत्वपूर्ण रिसर्च को पूरा किया है, जिसे नेचर जियोसाइंस जर्नल में प्रकाशित किया गया है। सोलर विंड दरअसल सूरज से निकलने वाले आवेशित कणों का एक निरंतर बहने वाला तूफान है।

चूंकि चांद के पास अपना कोई वातावरण या मैग्नेटिक फील्ड नहीं है, इसलिए यह सोलर विंड सीधे उसकी सतह से टकराती है। करोड़ों सालों से चांद को कवर करने वाली ढीली मिट्टी, जिसे रिगोलिथ कहते हैं, इन तूफानों का सामना कर रही है और उसने अपने अंदर इस भयंकर टकराव का पूरा रिकार्ड सुरक्षित रखा है। यह मिट्टी नोबल गैसों जैसे हीलियम, नियान, आर्गन, क्रिप्टन और जेनन के लिए एक प्राकृतिक फाइलिंग कैबिनेट की तरह काम करती है, क्योंकि ये गैसें दूसरे तत्वों के साथ बहुत कम प्रतिक्रिया करती हैं और इसलिए सबसे भरोसेमंद गवाह मानी जाती हैं। वैज्ञानिकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती चांद के डार्क साइड के सैंपल्स की अनुपलब्धता थी, जिससे वे पास वाले हिस्से से इसकी तुलना नहीं कर पाते थे। चीन के चेंज-6 मिशन ने इस मुश्किल को आसान कर दिया, जब वह चांद के साउथ पोल-ऐटकेन बेसिन से 1.935 ग्राम रिगोलिथ धरती पर लेकर आया। रिसर्चर्स ने चेंज-6 के मटेरियल का काफी विस्तार से नोबल गैस विश्लेषण किया। इस दौरान, पांचों गैसों के कंसंट्रेशन और आइसोटोप रेशियो को मापा गया, जिसमें नियान के नंबर्स ने सबसे ज्यादा चौंकाया। दो नियान आइसोटोप 20एनई और 22एनई के बीच का रेशियो 11.34 प्लस या माइनस 0.22 निकला, जो चांद के पास वाले हिस्से के पुराने सैंपल्स से काफी कम था।

सालों बाद खुला अंतरिक्ष में दिख रहे साधारण क्षुद्रग्रह का रहस्य

कैलिफोर्निया। अंतरिक्ष के रहस्यमयी पिंड 1998 एसएच2 की वास्तविक पहचान आखिरकार दुनिया के सामने आ गई है। अंतरिक्ष वैज्ञानिकों द्वारा जिसे अब तक एक साधारण क्षुद्रग्रह माना जा रहा था, वह वास्तव में एक सक्रिय धूमकेतु है। इस खोज ने न केवल 30 वर्षों पुराने वैज्ञानिक रहस्य से पर्दा उठाया है, बल्कि ऐसे डार्क कामेट्स के अस्तित्व की ओर भी संकेत किया है, जो सामान्य धूमकेतुओं की तरह स्पष्ट पूंछ या चमक नहीं दिखाते। दक्षिणी कैलिफोर्निया स्थित नासा की जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए इस ताजा अध्ययन के अनुसार, अगस्त 2025 में यह पिंड पृथ्वी से लगभग 30 लाख किलोमीटर की दूरी से गुजरा था। इसी दौरान उपलब्ध नए आंकड़ों और पुराने अवलोकनों का दोबारा विश्लेषण करने पर इसकी वास्तविक प्रकृति सामने आई। शोधकर्ताओं ने बताया कि 1998 से 2016 तक इस पिंड की कक्षा का अध्ययन किया गया था, लेकिन उस समय इसके धूमकेतु होने के स्पष्ट संकेत नहीं मिले। वर्ष 2025 में पृथ्वी के अपेक्षाकृत करीब आने पर वैज्ञानिकों ने इसकी गति और कक्षा का अत्यंत सटीक विश्लेषण किया। आप्टिकल एस्ट्रोमेट्री तकनीक से पता चला कि इसकी गति पर ऐसे गैर-गुरुत्वाकर्षणीय प्रभाव पड़ रहे थे, जिन्हें किसी सामान्य एस्टेरायड से नहीं समझाया जा सकता था। जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी के नेविगेशन इंजीनियर डेविड फार्नोचिया के अनुसार, विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि यह पिंड सूर्य की गर्मी के प्रभाव से भीतर मौजूद बर्फ के पिघलने पर बेहद सूक्ष्म मात्रा में गैस छोड़ रहा था। यही गैस इसे हल्का-सा अतिरिक्त धक्का दे रही थी, जिससे इसकी कक्षा में मामूली लेकिन महत्वपूर्ण बदलाव दिखाई दे रहे थे। यही व्यवहार सक्रिय धूमकेतुओं की पहचान माना जाता है। वैज्ञानिकों ने दुनिया की शक्तिशाली दूरबीनों से प्राप्त चित्रों का अध्ययन किया, जिनमें इस पिंड के पीछे बेहद हल्की लेकिन स्पष्ट पूंछ दिखाई दी। इसके बाद पुष्टि हुई कि 1998 एसएच2 वास्तव में एक धूमकेतु है। अब इसका आधिकारिक नाम बदलकर पी/1998 एसएच2 कर दिया गया है। विशेषज्ञों का कहना है कि सामान्य धूमकेतुओं में गैस और धूल का उत्सर्जन अधिक होता है, जिससे उनकी चमकदार पूंछ और कोमा आसानी से दिखाई देते हैं। लेकिन 1998 एसएच2 में यह गतिविधि बेहद कमजोर थी, इसलिए यह लंबे समय तक एक साधारण एस्टेरायड जैसा दिखाई देता रहा।

ट्रंप के कैलिफोर्निया गोल्फ कोर्स से संदिग्ध गिरफ्तार, हथियार और विस्फोटक सामग्री बरामद

वाशिंगटन

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के कैलिफोर्निया स्थित गोल्फ कोर्स से दो अगस्त को एक संदिग्ध व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया। उसके पास से हथियार और विस्फोटक सामग्री के रूप में गोला-बारूद बरामद हुआ है। इस घटना से सुरक्षा और कानून प्रवर्तक एजेंसियां भौचक हैं। लास एंजिल्स काउंटी शेरिफ विभाग कहा कि दक्षिणी कैलिफोर्निया में ट्रंप नेशनल गोल्फ क्लब के बाहर रविवार को एक हथियारबंद व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया। संघीय एजेंटों के अनुसार, यह संदिग्ध व्यक्ति परिसर में घूम रहा था।

रिपोर्ट के अनुसार, एक संघीय कानून प्रवर्तन सूत्र ने बताया कि सीक्रेट सर्विस इस बात की जांच कर रही है कि क्या वह व्यक्ति राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के लिए खतरा था। जब संदिग्ध की गिरफ्तारी की घोषणा की गई तब ट्रंप कैलिफोर्निया जा रहे एयर फोर्स 1 विमान में सवार थे। राष्ट्रपति अपने रैंचो पालोस वर्देस गोल्फ कोर्स में रिपब्लिकन नेशनल कमेटी के डिनर में शामिल होने वाले हैं।

अधिकारियों के अनुसार, संदिग्ध की पहचान डाउनी के 38 वर्षीय जीनिन जान टैले के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि टैले के खिलाफ एल सेगुंडो में डकैती का एक मामला पहले से दर्ज है। शेरिफ विभाग के अनुसार, टैले मैदान पर फोटो खींचने के साथ वीडियो बना रहा था। ऐसा लग रहा था कि वह सुरक्षा गतिविधियों पर नजर रख रहा था। उसे छुपाकर हथियार ले जाने और प्रतिबंधित गोला-बारूद रखने के आरोप में गिरफ्तार किया गया।

लास एंजिल्स काउंटी डिस्ट्रिक्ट अटार्नी कार्यालय के अनुसार, टैले ने चार आरोपों में खुद को निर्दोष बताया। इन आरोपों में नवंबर 2025 की डकैती, ट्रंप नेशनल गोल्फ क्लब में ताजा गिरफ्तारी के बाद दर्ज हथियार से जुड़े तीन आरोप शामिल हैं।

शेरिफ विभाग ने कहा कि एफबीआई की संयुक्त आतंकवाद विरोधी टास्क फोर्स के जासूसों ने टैले के घर की तलाशी ली। इस दौरान एक नोटबुक बरामद हुई। इसमें एआर-स्टाइल राइफल, .45 कैलिबर की पिस्तौल, बाडी आर्मर, ज्यादा क्षमता वाली मैगजीन, गोला-बारूद, रेडियो सिग्नल डिवाइस आदि के बारे में लिखा है।

अंतरिक्ष में भटक रहा नासा का स्विफ्ट बूस्ट मिशन

वाशिंगटन। एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक उपग्रह को बचाने भेजा गया नासा का महत्वाकांक्षी स्विफ्ट बूस्ट मिशन खुद ही संकट में घिर गया है। बीते दिनों लान्च किया गया लिंक नामक स्पेसक्राफ्ट, जिसे नासा की स्विफ्ट आब्जर्वेटरी की मदद के लिए भेजा गया था, अब तकनीकी खराबी के कारण अंतरिक्ष में भटक रहा है। 3 जुलाई को इस मिशन को नार्थ्राप ग्रुमैन के पेगासस एक्सएल राकेट के माध्यम से धरती की निचली कक्षा में स्थापित किया गया था। एरिजोना स्थित कंपनी कैटलिस्ट स्पेस टेक्नोलाजी द्वारा निर्मित लिंक का मुख्य कार्य नासा की स्विफ्ट आब्जर्वेटरी से जुड़कर उसे उच्च कक्षा में पहुंचाना था, जो ब्रह्मांड में गामा-रे बर्स्ट जैसी तीव्र ऊर्जा वाली घटनाओं की खोज के लिए समर्पित है। लान्च के मात्र कुछ ही हफ्तों के भीतर लिंक स्पेसक्राफ्ट के साथ दिक्कतें शुरू हो गईं। नासा ने हाल ही में एक अपडेट में बताया कि लिंक सर्विसिंग स्पेसक्राफ्ट को अपने एटीट्यूड कंट्रोल (अंतरिक्ष में स्थिति बनाए रखने) में गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप यह अंतरिक्ष में अनियंत्रित रूप से गोल-गोल घूमने लगा है और इससे लगातार संपर्क बनाए रखने में भी बाधा आ रही है।

दुनिया के सबसे तेज टोही विमानों में मिग-25 को किया था शामिल

वाशिंगटन

शीत युद्ध के दौर में अमेरिका और सोवियत संघ के बीच सैन्य तकनीक की प्रतिस्पर्धा चरम पर थी। दोनों देशों ने ऐसे लड़ाकू विमान विकसित किए, जिन्होंने आधुनिक विमानन तकनीक को नई दिशा दी। जहां अमेरिका ने अपने अत्याधुनिक एसआर-71 ब्लैकबर्ड में महंगे टाइटेनियम का इस्तेमाल किया, वहीं सोवियत संघ ने मिग-25 फाक्सबैट के निर्माण में निकेल-स्टेनलेस स्टील को प्राथमिकता दी।

यह फैसला उस समय अलग नजर आया, लेकिन इसी तकनीकी सोच ने मिग-25 को दुनिया के सबसे तेज टोही विमानों में शामिल कर दिया। भारतीय वायुसेना में मिग-25आर टोही विमान ने 1981 से 2006 तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कारगिल युद्ध के दौरान आपरेशन सफेद सागर में इस विमान ने दुश्मन की तैनाती, बंकरों, आपूर्ति मार्गों और तोपों की स्थिति की जानकारी जुटाने में अहम योगदान दिया। इसके अलावा, आपरेशन पराक्रम के दौरान भी इसका इस्तेमाल किया गया।

अमेरिका ने एसआर-71 के लिए टाइटेनियम इसलिए चुना क्योंकि यह हल्का होने के साथ अत्यधिक तापमान सहने में सक्षम था। मैक 2.5 से अधिक की गति पर उड़ते समय विमान की बाहरी सतह का तापमान 300 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंच सकता था। ऐसी स्थिति में सामान्य धातुएं कमजोर पड़ सकती थीं। टाइटेनियम ने एसआर-71 को तेज गति और ऊंचाई पर उड़ान भरने की क्षमता दी, लेकिन इसकी तकनीक बेहद गोपनीय रही और इसे कभी दूसरे देशों को नहीं दिया गया। इसके विपरीत, सोवियत इंजीनियरों ने मिग-25 के लिए भारी लेकिन मजबूत स्टील संरचना का विकल्प चुना। विमान का करीब 80 प्रतिशत हिस्सा निकेल-स्टेनलेस स्टील से बनाया गया, जबकि इसमें कुछ मात्रा में टाइटेनियम और अन्य मिश्रित धातुओं का इस्तेमाल हुआ। स्टील टाइटेनियम की तुलना में भारी था, लेकिन इसकी लागत कम थी और बड़े पैमाने पर उत्पादन आसान था। सोवियत कारखानों में इसकी मरम्मत और निर्माण प्रक्रिया भी अधिक सुविधाजनक थी। मिग-25 का वजन करीब 20 हजार किलोग्राम था, फिर भी इसमें लगाए गए दो शक्तिशाली टर्बोजेट इंजनों ने इसे मैक 2.83 की रफ्तार तक पहुंचने में सक्षम बनाया। यह अपने समय के सबसे तेज सैन्य विमानों में शामिल रहा। इसकी ऊंचाई पर उड़ने और तेज गति से लंबी दूरी तय करने की क्षमता ने इसे दुश्मन की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए बेहद प्रभावी बनाया। सोवियत संघ ने मिग-25 की तकनीक अपने सहयोगी देशों को भी दी। मिग-25 की सबसे बड़ी विशेषता इसकी कम लागत, मजबूत डिजाइन और आसान रखरखाव था। इसी वजह से रूस ने इसे कई देशों को उपलब्ध कराया। भारत जैसे देशों के लिए यह विमान लंबे समय तक रणनीतिक निगरानी क्षमता का महत्वपूर्ण साधन बना रहा। शीत युद्ध की तकनीकी दौड़ में बने ये दोनों विमान आज भी सैन्य इंजीनियरिंग के दो अलग-अलग दृष्टिकोणों के उदाहरण माने जाते हैं।

बांग्लादेश में रंगपुर से लेकर ढाका तक छात्र अशांति, संगठनों में टकराव

ढाका

बांग्लादेश की अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना की सरकार के समय जुलाई विद्रोह के दौरान लोकतांत्रिक जागृति का प्रतीक रहे शिक्षण संस्थान दो साल बाद लड़ाई के मैदान में बदल गए हैं। दो दिनों के भीतर जातीयतावादी छात्र दल (जेसीडी) और इस्लामी छात्र शिविर के कार्यकर्ताओं के बीच झड़पें रंगपुर के बेगम रोकेया यूनिवर्सिटी से लेकर राजधानी के जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, ढाका कालेज और गवर्नमेंट मदरसा-ए-आलिया तक फैल गईं। इसके बाद यूनिवर्सिटी प्रशासन को जांच शुरू करनी पड़ी और अतिरिक्त पुलिस बल तैनात करना पड़ा। यह हिंसा विचारधारा, कैंपस में प्रभाव और संगठनात्मक दबदबे को लेकर विरोधी छात्र संगठनों के बीच बढ़ते तनाव के बीच हुई।

ढाका ट्रिब्यून अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, पहली बड़ी झड़प बेगम रोकेया यूनिवर्सिटी में जुलाई विद्रोह दिवस के मौके पर आयोजित एक

प्रदर्शनी के दौरान हुई। यूनिवर्सिटी प्रशासन के मुताबिक, हिंसा तब शुरू हुई जब छात्र दल के कार्यकर्ताओं ने न्यायिक हत्या शीर्षक वाले एक बैनर पर आपत्ति जताई। इस बैनर पर जमात-ए-इस्लामी और बीएनपी के उन छह नेताओं की तस्वीरें थीं, जिन्हें 1971 के मुक्ति संग्राम के दौरान मानवता के खिलाफ अपराधों का दोषी ठहराया गया था। देखते-देखते यह विवाद हिंसक हो गया। परिसर में पांच घंटे से ज्यादा समय तक लाठी-डंडे चले। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि दोनों छात्र संगठनों के कार्यकर्ताओं के पास धारदार हथियार, हाकी स्टिक, लोहे की छड़ें, बांस के डंडे और हेलमेट थे। इस दौरान कैंपस के बाहर ट्रैफिक रुक गया। दोनों संगठनों ने हिंसा भड़काने के लिए एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहराया। बाद में यूनिवर्सिटी प्रशासन ने घटना की जांच के लिए पांच सदस्यीय समिति का गठन किया। यह छात्र अशांति ढाका में फैल गई। राजधानी ढाका स्थित जगन्नाथ यूनिवर्सिटी में एक डाक्यूमेंट्री स्क्रीनिंग के दौरान विरोधी छात्र समूह आपस में भिड़ गए। इस दौरान यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन के चेयरमैन प्रो. डा. मामून अहमद भी मौजूद रहे।

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि तनाव तब शुरू हुआ जब जगन्नाथ यूनिवर्सिटी सेंट्रल स्टूडेंट्स यूनियन और जातीय छात्र शक्ति के सदस्य कैंपस से जुड़ी कई मांगों को जल्द लागू करने की मांग वाले प्लेकार्ड लेकर आडिटोरियम में घुसने की कोशिश करने लगे। छात्र दल के कार्यकर्ताओं के दखल के बाद स्थिति बिगड़ गई और आखिरकार बड़े पैमाने पर हिंसा भड़क उठी। बाद में झड़पें नेशनल मेडिकल कालेज हास्पिटल तक पहुंच गईं। यहां घायल छात्रों को इलाज के लिए ले जाया गया था। डाक्टरों ने बताया कि 70 से ज्यादा घायल लोगों का इलाज किया गया। इस हिंसा में छात्र दल, शिबिर, जातीय छात्र शक्ति और यूनिवर्सिटी की सेंट्रल स्टूडेंट्स यूनियन के नेता साथ ही कई पत्रकार घायल हुए हैं। ढाका कालेज भी हिंसा से अछूता नहीं रहा। प्रत्यक्षदर्शियों ने झड़प, ईंट-पत्थर फेंकने और लाठियों व लोहे की छड़ों के खुले प्रदर्शन का दावा किया है। यहां लगभग 20 लोग घायल हुए। दोपहर में बख्शी बाजार के गवर्नमेंट मदरसा-ए-आलिया में हिंसा फैल गई। इस हिंसा में प्रिंसिपल समेत कई लोग घायल हो गए। राजधानी के शिक्षण संस्थानों में बड़ी संख्या में पुलिस जवान तैनात किए गए हैं। बेगम रोकेया यूनिवर्सिटी प्रशासन और जगन्नाथ यूनिवर्सिटी प्रशासन ने जांच समितियों की घोषणा की है।